संकुल स्तर पर शिक्षकों के अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह – जून, 2019

पंचम वर्ष अंक –1

शाला स्तर पर शिक्षकों को अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

शाला प्रवेशोत्सव 2019

एकक लइका ला देबो धियान, तभे पाही वो भरपुरहा गियान

छत्तीसगढ़ के शिक्षकों की पहचान

अब हर बच्चे के सीखने पर व्यक्तिगत ध्यान

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन, छत्तीसगढ़

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें, सब बढ़ें

अपनों से अपनी बात

देखते देखते चर्चा पत्र अपने पांचवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पाँच वर्षों के इस सफर में आपके साथ बहुत कुछ सीखने को मिला है। कौन सी चीजें धरातल में काम करती है और कौन सी चीजें फेल हो सकती हैं, इसका बेहतर अनुभव मिला। वैसे चर्चा पत्र के माध्यम से सीधे आपसे जुड़ने का अवसर मिला और बहुत सी चीजें जमीनी स्तर पर होते हुए देखी गयी। ज्ञान का आदान-प्रदान भी हुआ और शिक्षकों द्वारा किये जा रहे विभिन्न नवाचारों को प्रोत्साहन भी मिल।

संकुल समन्वयकों को भी अपने मासिक बैठकों में अकादमिक चर्चाओं के आयोजन के लिए आवश्यक सहयोग मिला। गत सत्र के अंत तक सभी संकुलों से यह अपेक्षा थी कि वे अब तक के चर्चा पत्रों की प्रतियां अपने संकुल की सभी शालाओं में फ़ाइल बनाकर उपलब्ध करायेंगे। आशा है कि पुराने सभी अंकों को आप सन्दर्भ सामग्री के रूप में सभी शालाओं में रखते हुए उनका समय समय पर उपयोग कर सकेंगे।

इस वर्ष स्कूलों में बच्चों की गुणवत्ता के लिए व्यापक सुधार कार्यक्रम का अनुभव आपको होगा। आप सभी इस परिवर्तन में सक्रिय सहयोग कर बच्चों के स्तर में सुधार के लिए आपस में मिलकर काम कर सकेंगे। शिक्षकों द्वारा छोटे छोटे समूह में आपस में मिलकर एक दूसरे से सीखने की प्रवृत्ति का भी विकास हो रहा है। शिक्षकों द्वारा अपनेअपने विषय के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी में जुड़कर सीखने-सिखाने का काम लगातार जारी है। इसी प्रकार छत्तिसगढ़ राज्य में अधिकतम संख्या में शिक्षक स्वयं रूचि लेकर विभिन्न ऑनलाइन कोर्स को पूरा कर रहे हैं।

आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राज्य में चार वर्ष के अनुभव एवं क्षेत्र में इसके मांग के आधार पर अब इस सत्र में चर्चा पत्र आपको आनलाइन के साथ-साथ मुद्रित होकर भी मिल सकेगा। अब आपसे यह अपेक्षा है कि अकादमिक मुद्दों पर चर्चा एवं समझ विकसित करते हुए शालाओं में अपेक्षित बदलाव लाने में पूर्व की अपेक्षा और अधिक सक्षम होंगे।

एजेंडा एक– शाला प्रवेशोत्सव

इस वर्ष शाला में प्रारंभिक पंद्रह दिनों तक गत सत्र के लर्निंग आउटकम पर निरंतर सघन अभ्यास के अलावा प्रतिदिन अलग-अलग मुद्दों पर फोकस करते हुए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम शाला स्तर पर आयोजित किए जाएंगे :

1. समुदाय के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा बच्चों को स्थानीय कहानियों का वाचन।
2. गाँव / वार्ड में शाला खुलने के लिए जिम्मेदार सदस्यों एवं पुराने विद्यार्थियों का स्वागत एवं उनके द्वारा शाला से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करना।
3. बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण एवं उनकी प्रतिभाओं से परिचय।
4. शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों द्वारा आसपास रैली/पदयात्रा निकालकर शासकीय शाला के प्रति सकारात्मक माहौल बनाकर बच्चों को प्रवेश दिलवाना।
5. शाला को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाने हेतु स्थानीय स्तर पर कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वयन एवं सामुदायिक सहभागिता के लिए विभिन्न क्षेत्रों का निर्धारण।
6. शाला में बच्चों की गुणवत्ता में सुधार पर फोकस करते हुए मिलकर एक मिशन स्टेटमेंट बनाकर उस पर पूरे सत्र में अमल करने हेतु कार्यवाहियां तय करना।
7. पाठ्य-पुस्तकों में उपलब्ध क्यू-आर कोड देखने के तरीकों को पालकों / बच्चों को सिखाना।
8. पालकों विशेषकर माताओं एवं बच्चों के लिए कुछ खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन।
9. पठन कौशल विकसित करने मुस्कान पुस्तकालय से पुस्तकों का वाचन करने का अवसर।
10. समुदाय के बीच जाकर गणित मेला का आयोजन कर बच्चों की प्रतिभा का प्रदर्शन।
11. बच्चों द्वारा विज्ञान में कबाड़ से जुगाड़ आधारित प्रयोगों का प्रदर्शन।
12. गाँव में स्कूल की पढाई के बारे में प्रचार-प्रसार के लिए दीवार लेखन, नारे एवं स्लोगन।
13. समुदाय के लिए जन सहयोग के क्षेत्रों की पहचान कर शाला द्वारा श्रमदान/ सहयोग।
14. शाला कार्यों में समय समय पर सहयोग देने के लिए इच्छुक स्थाई पैनल से परिचय
15. स्थानीय स्तर पर पर्यावरण की रक्षा के लिए विशिष्ट कार्य यथा रेन वाटर हार्वेस्टिंग।

उपरोक्तानुसार शाला खुलने के प्रारंभिक दिनों में उपरोक्त में से विभिन्न कार्यों को अलग अलग दिवस में आपस में मिलकर प्रतिदिन अलग से कुछ समय निकालकर किया जा सकता है।

एजेंडा दो– शाला प्रवेशोत्सव के दौरान विभिन्न सम्मान

शाला प्रवेशोत्सव के दौरान शालाओं को निम्नलिखित क्षेत्रों में बेहतर कार्य करने हेतु जिले/ विकासखंड स्तर पर सम्मानित किया जा सकता है।

- निजी शालाओं से सबसे अधिक बच्चों को सरकारी शालाओं में प्रवेश दिलाने वाला गाँव/ वार्ड। बच्चों में गुणवत्ता लाने हेतु सबसे अधिक सामुदायिक सहयोग देने वाला गाँव/वार्ड ।
- समर कैंप के दौरान सीखने/ सिखाने से संबंधित अधिकतम गतिविधियां करने वाला वार्ड/ गाँव।
- ऑनलाइन प्रश्न बैंक का सबसे अधिक उपयोग करने वाला विकासखण्ड/जिला।
- पाठ्य- पुस्तक में क्यू-आर कोड का सबसे अधिक उपयोग करने वाला विकासखण्ड/जिला।
- बच्चों से इग्नाइट/इन्सपायर अवार्ड में अधिक से अधिक नामांकन भेजने वाला विकासखण्ड /जिला।
- अधिक से अधिक शिक्षकों द्वारा प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेखों का प्रकाशन।
- पीछे छूट रहे बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा एवं अन्य बच्चों के समकक्ष लाने हेतु नवाचारी प्रयास ।
- शिक्षकों द्वारा अधिक से अधिक विभिन्न ऑनलाइन कोर्सेस में पंजीयन कर उन्हें पूरा करना।

बाह्य संस्थाओं द्वारा भी इन मुद्दों में से कुछ मुद्दों को ध्यान में रखकर बेहतर काम करने वाले जिलों एवं विकासखंडों को नगद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। सत्र के प्रारंभ से ही अपने विकासखंड में नेतृत्व देते हुए कमर कस कर तैयारी कर लेवें।

एजेंडा तीन– पलायन और नियमित उपस्थिति

इस बार सत्र के प्रारंभ से ही बच्चों की नियमित उपस्थिति एवं नियमित कक्षा संचालन के लिए ठोस योजना बनाकर काम करें।

आपने गत वर्षों में देख लिया होगा कि ऐसे कौन से परिवार हैं जो सत्र के बीच में बच्चों को लेकर पलायन कर जाते हैं। उन्हें सत्र के प्रारंभ में ही प्रवेश के दौरान समझाइश देकर इस बार बच्चों को अपने साथ न ले जाकर वहीं बड़े-बुजुर्गों की देखरेख में छोड़कर जाने हेतु प्रेरित करें अधिक संख्या में ऐसे बच्चे होने पर मौसमी आवासीय सुविधा वाले डोरमेटरी की मांग समय पर करें। पालकों को बच्चों की नियमित उपस्थिति एवं सभी प्रकार के आकलन में पूरी तैयारी के साथ उपस्थिति पर भी जोर देवें।

एजेंडा चार– राज्य स्तरीय आकलन

इस बार SCERT द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय आकलन आप सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। विभिन्न स्तरों पर इसको लेकर संशय की स्थिति पैदा हुई जबकि अंतर केवल इतना था कि समेटिव दो जो कि जिले से आयोजित होता था के बदले समेटिव दो के पेपर राज्य स्तर से लर्निंग आउटकम को आधार मानकर तैयार किये गए। शेष सभी बातें यथावत थी, उनमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया गया था। पहली बार किसी राज्य में एक साथ इतने कम समय में निर्णय लेकर सभी कक्षाओं एवं सभी विषयों के लिए आकलन का कार्य संपन्न करवाया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर SCERT द्वारा विश्लेषण कर सुधार हेतु कार्यवाहियां एवं नीतिगत निर्णय प्रस्तावित किये जायेंगे। आपको अपने स्तर पर निम्नलिखित कार्यवाहियां करनी चाहिए-

- आपको लर्निंग आउटकम आधारित प्रश्नों का स्वरूप पता चल गया। ऐसे प्रश्नों को कैसे हल करें और हल करने कैसे पढाई करवाई जाए, इस आधार पर शिक्षण।
- लर्निंग आउटकम को ध्यान में रखकर प्रत्येक लर्निंग आउटकम को सभी बच्चों में समय पर हासिल करवाने ध्यान देते हुए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित करें।
- बच्चों ने जिन लर्निंग आउटकम पर ठीक से काम नहीं किया है उनकी पहचान कर उनमें सुधार के लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- शिक्षक आपस में एक दूसरे के साथ मिलकर विषयवार प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से विभिन्न लर्निंग आउटकम की प्राप्ति के लिए मिलकर काम कर सकेंगे।
- बच्चों से अधिक से अधिक लिखित कार्य हेतु अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य करवाना होगा।

एजेंडा पाँच– लिखित अभ्यास हेतु सुविधाएं

राज्य में इस बार शालाओं में बच्चों के लिए विभिन्न कक्षाओं एवं विषयों के लिए अभ्यास पुस्तिकाएँ, बच्चों द्वारा समूह में काम करने हेतु बड़े साइज़ की वर्क शीट्स एवं उपचारात्मक शिक्षण हेतु सामग्री के साथ साथ लर्निंग आउटकम आधारित अभ्यास पुस्तिकाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी

इस बार बच्चों से अधिक कापी मंगवाए जाने की आवश्यकता नहीं होगी, इस बात का ध्यान रखें।

एजेंडा छः– प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान

इस सत्र से कक्षा अध्यापन में मुख्य फोकस प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देते हुए सभी को सीखने के लिए अपना रास्ता तैयार करने के अवसर दिया जाना है। हमारे कक्षा शिक्षण को इक्कीसवीं सदी के अनुरूप बनाने हमें **one size fits all** वाली धारणा का त्याग कर सभी के सीखने पर ध्यान देकर प्रत्येक बच्चे के लिए अपना प्लान बनाकर उस पर काम करना होगा। व्यक्तिगत शिक्षण योजना में हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा-

- प्रत्येक बच्चे के सीखने की गति के अनुसार समय का निर्धारण **(Adjusting the pace)**।
- प्रत्येक बच्चे के सीखने के तरीके के आधार पर सिखाने के एप्रोच में आवश्यक बदलाव **(Adjusting the learning approach)**।
- प्रत्येक बच्चे की रूचि एवं अनुभव के आधार पर आवश्यक बदलाव **(Leveraging student interests and experience)**।

उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी निर्धारित समय में हम प्रत्येक बच्चे के लिए प्रति माह कुछ लर्निंग आउटकम तय कर उन्हें समय सीमा में सिखाने का प्रयास करेंगे ताकि कक्षा में विभिन्न बच्चों के बीच सीखने के मामले में अधिक गैप न हो। प्रत्येक बच्चे में ये लर्निंग आउटकम हासिल हो जाए, इस हेतु शिक्षक अपनी ओर से सभी आवश्यक प्रयास करेंगे और उपयुक्त प्रविधियां एवं रणनीतियां उपयोग में लाएंगे। बच्चों के रूचि एवं अनुभवों को ध्यान में रखकर भी हमें प्रत्येक बच्चे के सीखने के लिए योजना **(Individualized Learning Plan)** बनाकर कार्य करना होगा।

कक्षा में विद्यार्थी विकास सूचकांक को किसी उपयुक्त स्थल पर रखेंगे जिसे नियमित रूप से अद्यतन करते हुए प्रत्येक माह के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को प्रदर्शित करना होगा। इसी में उस माह निर्धारित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति की जानकारी बच्चे के सामने टिक कर सभी को उन आउटकम को प्राप्त करने एक दूसरे के साथ समूह बनाकर काम करने के अवसर देने होंगे। इस पर बारीकी से सोचकर आपस में मिलकर प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से काम करना शुरू करें।

एजेंडा सात– आरंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास

भाषा पाठ्यक्रमों में मौखिक भाषा विकास को अक्सर 'सुनना' और 'बोलना' के रूप में दर्शाया जाता है परन्तु मौखिक भाषा के आयाम इससे कहीं ज़्यादा व्यापक है। मौखिक भाषा में बोलना और सुनना के अतिरिक्त समझना और प्रतिक्रिया देना, नए-नए शब्दों को बातचीत में प्रयोग करना, सार संकलन करना, सोचने के लिए बातचीत का सहारा लेना आदि भी शामिल हैं। मौखिक भाषा विकास के लिए आप अपनी कक्षा में कई प्रकार की गतिविधियाँ कर सकते हैं । कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं-

चित्रों पर बातचीत- चित्र बातचीत का एक बहुत बढ़िया माध्यम हो सकता है। चित्र पर भिन्न प्रकार के प्रश्न और चर्चाएँ की जा सकती हैं, जैसे- चित्र में मौजूद तत्त्वों को पहचानना, हो रही घटनाओं के बारे में चर्चा और तर्क करना।

बच्चों द्वारा अपने अनुभवों, जगहों और घटनाओं का वर्णन- बच्चों को अपने आस-पास के वातावरण, अनुभवों से जुड़ी चीज़ों पर और पुरानी घटनाओं के बारे में बात करना बहुत पसंद होता है। अपने भविष्य से जुड़ी चर्चा भी उन्हें खूब भाती है। कोशिश करें कि आप उनसे उनके अनुभवों के बारे में ढेर सारी चर्चा करें, उन्हें सोचने और प्रतिक्रिया देने का पूरा मौका भी दें। अपनी ओर से कम बोलें और बच्चों की बात गौर से सुनें ।

कहानियाँ सुनना और उन पर बातचीत- कहानी सुनाते समय बच्चों से कैसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं, वह नीचे के टेबल में विस्तार से दिया गया है :

प्रश्नों के प्रकार	उदाहरण
अनुमान लगाने वाले प्रश्न	तुम्हें क्या लगता है, आगे क्या हुआ होगा? उसने उस दस रूपये से क्या किया होगा?
कहानी के पात्रों का वर्णन (जो कहानी में न दिया गया हो)	तुम्हें क्या लगता है, वह लड़की किस गाँव कहानी के किसी पात्र, स्थिति, घटना अथवा कहानी के अन्त को बदलना से आई होगी? उसकी उम्र कितनी होगी? क्या वह बूढ़ा आदमी तेज़ चल पाता होगा?
कैसे और क्यों वाले प्रश्न,खुले छोर वाले प्रश्न या जांचने वाले प्रश्न जिनके लिए बच्चों को सोचना पड़े और जिनका उत्तर थोड़ा लम्बा हो।	उसने ऐसा क्यों किया होगा? उसे यह बात कैसे पता चली होगी? तुम्हें क्या लगता है, दादी ने जो किया वह सही था या नहीं? यदि उस बच्चे की जगह तुम होते तो क्या करते?
कहानी को पुनः सुनाना।	कहानी में सबसे पहले क्या हुआ? इसके बाद क्या हुआ?
कहानी के किसी पात्र, स्थिति, घटना अथवा कहानी के अन्त को बदलना।	क्या होता अगर इस कहानी में दादी मदद न करती? सोचो अगर वो माली अन्त में गाँव ही छोड़कर चला जाता, तो?

अभिनय और रोल प्ले : कक्षा में बच्चों के साथ अनौपचारिक रूप से अभिनय करने पर वह एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं जो उनकी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता बढ़ाने के साथ-साथ भाषा के उपयोग को बढ़ाने में भी मदद करता है ।

चित्रांकन- बच्चे जब चित्र बनाते हैं और फिर उनके बारे में अध्यापक अथवा अन्य बच्चों को बताते हैं, तो उनमे रचनात्मक तरीके से खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित होती है।

पठन से सम्बंधित मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ- कक्षा में पाठ पुस्तक के पाठ पढ़ाते समय, तीनों चरणों में- पठन के पूर्व, पठन के दौरान और पठन के बाद, विभिन्न प्रकार से बच्चों की सहभागिता बढ़ाई जा सकती है। पाठ में दिए गए चित्रों पर बातचीत करें, उनसे प्रश्न बनवाएँ, उनसे राय व्यक्त करने के लिए कहें , बच्चों से कहानी को पुनः सुनाने के लिए कहें, उनसे कहानी में आगे की घटनाओं के बारे में अनुमान लगवाएँ। इसके अलावा भी बच्चों के साथ जितना हो सके पाठ पर चर्चा करें ।

मौखिक भाषा-विकास के खेल- मौखिक भाषा विकास के लिए विविध प्रकार के खेल हो सकते हैं, जैसे : सामूहिक प्रयासों से कहानी का निर्माण करना, वस्तुओं का अंदाज़ा लगाना, निर्देश देना और निर्देशों का पालन करना आदि।

बातचीत के दौरान ध्यान देने योग्य बातें- बातचीत को प्रोत्साहन देने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है, जैसेः -

- बच्चों की बात को गौर से सुनें और "अच्छा", "हम्म्म्म" अरेवाह जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके अपनी प्रतिक्रिया भी ज़रूर दें।
- यह अवश्य सुनिश्चित करें कि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को सहभागिता का मौका मिले ।
- बच्चों को नियमबद्ध तरीके से कहानी सुनाने या चित्र पर बात करने के लिए अधिक से अधिक अवसर दें।
- कक्षा में ऐसा माहौल बनाएँ की बच्चे अपनी बात बिना डर और झिझक के कह सकें।
- संवाद को आगे बढाने के लिए बच्चों को उकसाएँ, उनकी बात को दोहराएँ, उनकी बात को अलग ढंग से कहें और उनकी बात को विस्तारित करें ।
- हाँ / नहीं के उत्तर वाले व्रश्नों के बजाए खुले छोर वाले प्रश्न पूछें ।
- निर्देश देने के लिए छोटे और स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करें ।
- बच्चों को जोड़ों या समूहों में बैठाएँ और चर्चा तथा आदान-प्रदान के लिए नियमित व्यवस्था करें ।
- बच्चों को उत्तर देने के लिए समय दें । आप आतुरता में स्वयं उत्तर न दें।
- बातचीत करते हुए कुछ नए शब्दों का प्रयोग करें।

- बच्चों ने जो कुछ सीखा है, उसे पूरी कक्षा के साथ सांझा करने के लिए आगे बुलाएँ ।
- किसी भी अध्याय या शीर्षक के तहत बातचीत व चर्चा के अवसरों की योजना बनाएँ ।
- याद रखें, छोटे बच्चे मुख्य रूप से बातचीत से ही सोचते हैं । बच्चों को स्वयं को अभिव्य करने के मौके देकर अध्यापक बच्चों में सोचने और समझने के कौशल को विकसित करने में उनकी मदद कर सकते हैं।

एजेंडा आठ– समर कैम्प के दौरान पढाई

राज्य में समर कैम्प के आयोजन का यह द्वितीय वर्ष है। गत वर्ष बहुत बड़ी संख्या में शिक्षकों ने स्वस्फूर्त होकर अपने अपने क्षेत्र में समर कैम्प का आयोजन किया। समर कैम्प में गत वर्ष मुख्यतः बच्चों के लिए रोचक गतिविधियां, आर्ट एवं क्राफ्ट कार्य, विभिन्न कलाओं में बच्चों को अभ्यास आदि के साथ-साथ पढाई पर भी कुछ काम किया गया। इस वर्ष समर कैम्प के दौरान लर्निंग आउटकम को आधार मानकर कमजोर क्षेत्रों में सुधार के लिए प्रयास किए जाने पर जोर दिया गया एवं यह अवधारणा प्रस्तावित की गयी थी कि हम सबको समय रहते अपने निर्धारित लर्निंग आउटकम पर काम करना चाहिए। साथ ही बच्चों को शाला में बनाए रखने हेतु विभिन्न सह-संज्ञानात्मक गतिविधियाँ भी आयोजित की गयी। इस वर्ष भी बहुत बड़ी संख्या में शालाओं में समर कैम्प का आयोजन किया। कुछ शिक्षकों ने जिन्होंने मांगे जाने पर लिंक के माध्यम से सूचना दी, उनमें से कुछ विवरण इस प्रकार हैं:

- सुकमा जिले में संकुल समन्वयकों द्वारा प्राथमिक स्तर पर सरल कार्यक्रम के नाम से बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की गयी।
- दंतेवाड़ा से श्रीमति बेला यादव ने बच्चों को छोटी-छोटी कहानियाँ, चित्रकथा का निर्माण, कहानी सुनकर अपने स्व-अनुभव से उसे चित्रकथा में बदलने का कार्य ।
- नारायणपुर के संकुल केंद्र एडका के समन्वयक श्री लक्ष्मीकांत द्वारा अपने क्षेत्र में गणित एवं विज्ञान मेले का आयोजन किया गया ।
- बीजापुर से श्रीनिवास एटला द्वारा बच्चों को विषय आधारित प्रोजेक्ट कार्य, कबाड़ से जुगाड़ व गृह कार्य आदि को किए जाने के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया ।
- कोंडागांव से श्री शिवचरण साहू द्वारा मस्ती की पाठशाला का आयोजन कर अंग्रेजी के कर्सिव लेख, वाल पेंटिंग, गणितीय ट्रिक के साथ मशरूम उत्पादन सिखाया गया ।
- बस्तर के श्री सुकरू बघेल द्वारा बच्चों के प्रारंभिक भाषाई एवं गणितीय कौशल के विकास पर कार्य किया गया।

- गरियाबंद के श्री संतोष कुमार तारक द्वारा खेल खेल में पढाई के अवधारणा को समर कैम्प के दौरान मूर्त रूप देने का प्रयास किया गया ।
- महासमुंद के बागबाहरा विकासखंड के श्री रिंकल बग्गा ने समर कैम्प में विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ गणित मेले का आयोजन कर शाला के परिमाप से लेकर बच्चों का वजन नापकर उनके औसत आदि निकालने का अभ्यास करवाया ।
- धमतरी के प्राथमिक शाला उडेना के शिक्षकों ने बच्चों में रचनात्मक कौशल विकसित करने रचानात्मक शिविर का आयोजन किया और गेडी पर चलने से लेकर विभिन्न अकादमिक कार्य करवाए गए ।
- रायपुर जिले के राजिम में प्राथमिक शाला दीनदयाल उपाध्याय नगर में कमजोर बच्चों के साथ नोट एवं सिक्के के साथ विभिन्न व्यवहारिक पहलुओं पर अभ्यास करवाया गया ।
- दुर्ग जिले के परसदा पाटन के प्रधान पाठक श्री नरेश कुमार यादव द्वारा बच्चों के लिए अंग्रेजी क्लब का गठन करते हुए विभिन्न प्रभावी वक्ताओं को अपनी शाला में आमंत्रित कर बच्चों के लिए ज्ञानवर्धन सत्रों का आयोजन किया।
- राजनांदगांव के प्राथमिक शाला तिलई में बच्चों के लिए पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों को प्रोत्साहित किया गया ।
- बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड में विकासखंड स्तरीय समर कैम्प का आयोजन कर कबाड़ से जुगाड़ से लेकर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।
- कोरिया जिले के महुआपारा के श्रीमती श्वेता सोनी जो 365 दिन शाला चलाती हैं, द्वारा समर कैम्प के दौरान बच्चों को शैक्षिक भ्रमण करवाते हुए छप्पर बनाना से लेकर पढाइ-लिखाई से संबंधित बहुत से कार्य करवाए।
- कोरबा जिले के बलखीगार शाला में प्रेणादायक वीडियो के माध्यम से जीने की कला सिखाई गयी।
- रायगढ़ जिले के प्राथमिक शाला पुरेना में खेलगढ़िया का उपयोग कर बच्चों को खेल खेल में सिखाने का प्रयास किया गया।
- सरगुजा के उदयपुर में समर कैम्प के दौरान बहुत सी अकादमिक गतिविधियों का आयोजन कर बच्चों को अवकाश के दौरान जोड़े रखने का प्रयास हुआ।

एजेंडा नौ– इनोवेटिव पाठशाला

श्री ओरोबिन्दो सोसायटी द्वारा शिक्षकों से बिना बजट के किये जा सकने योग्य नवाचारों को आमंत्रित किया था। पूरे देश से लगभग छह सौ शिक्षकों एवं छत्तीसगढ़ से तीस शिक्षकों का चयन ऐसे नवाचारों के लिए किया गया था और उन्हें दिल्ली में पुरस्कृत किया गया। इन नवाचारों का उपयोग हम अपने नियमित अध्यापन में कर सकें, इस हेतु शिक्षकों के लिए उपयोगी एप्प **innovative pathshala** नाम से तैयार किया गया है जो कि आपको अपने पाठ को रूचिकर बनाकर पढ़ाने में सहयोग कर सकता है। ऐसे सभी शिक्षक जो अपने पाठ को लर्निंग आउटकम पर फोकस कर एक बेहतर पाठ योजना के साथ पढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए यह एप्प अत्यंत उपयोगी है। आप सभी इस एप्प को इस प्रकार से डाउनलोड कर सकते हैं।

अपने मोबाइल में प्ले स्टोर में जाकर **ZIIEI** टाईप कर उसे इंस्टाल करें। एप्लीकेशन डाउनलोड करने के बाद आपको इसमें रजिस्टर करना होगा। इस हेतु आपको केवल अपना नाम और मोबाइल नंबर डालना होगा। एप्प आपके उपयोग के लिए तैयार है।

आपको सबसे पहले अपना बोर्ड तय करना होगा। इसमें आपको **NCERT** से लेकर विभिन्न राज्यों के बोर्ड के कक्षा पांचवीं तक के पाठ योजनाएं उपलब्ध हैं। इसके बाद कक्षा, विषय एवं पाठ का चयन करना होगा जिसे आप देखना चाहते हैं।

सबसे पहले आप पाठ प्रवाह में उस पाठ को पढ़ाने के चरण, उद्देश्य, अधिगम से लेकर विभिन्न गतिविधियाँ एवं लगने वाले समय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके बाद उस पाठ में इस्तेमाल करने योग्य विभिन्न नवाचारी गतिविधियों यथा बैठने की व्यवस्था, मेडिटेशन एवं वार्म अप, कांसेप्ट एप्लीकेशन, रोल प्ले व कला प्रदर्शन, गलत चार्ट शिक्षण विधि, चक्के पे चक्का, शब्द सागर, प्रश्न-बैंक, ग्रिड-गेम, संगीतमय कुर्सी, कैरम बोर्ड, तम्बोला, राजा बेटा राजा बेटी, बहुविकल्पीय प्रश्न, मैं कौन हूँ, थीम आधारित उपस्थिति, वीडियो कांफ्रेंसिंग, नामकरण पद्धति, विद्यार्थी टेलीविजन, जिज्ञासा मंच, गृहकार्य, अपना गाँव अपना देश, भविष्य सृजन, प्रार्थना सभा और प्रश्नकाल, कौन बनेगा करोडपति, सीखने के प्रतिफल एवं सांप-सीढी जैसे नवाचारी गतिविधियों का उपयोग कर आप पाठ योजना बनाकर उपयोग कर सकते हैं।

छत्तीसगढ़ के सभी शिक्षकों से अनुरोध कि अपनी पाठ को तैयार करते समय एक बार अवश्य इस एप्प में से उसे पढ़ाने के समय किए जाने योग्य गतिविधियाँ देखकर उसे अपनाकर अपने पाठ को प्रभावी एवं रोचक बनाएं ।

एजेंडा दस– शाला खुलते ही आपसे अपेक्षाएं

राज्य में चर्चा पत्र के माध्यम से शालाओं में शिक्षकों ने गत चार वर्षों में विभिन्न बदलाव लाने का यास किया है। इस माह के चर्चा पत्र के आधार पर आप सभी को अपनी अपनी शालाओं में निम्नलिखित मुद्दों पर कार्य कर बदलाव की अपेक्षा है:-

1. एजेंडा एक के अनुसार शाला में प्रवेशोत्सव का आयोजन करना।
2. प्रारंभिक कुछ दिनों तक बच्चों के साथ गत कक्षा के लर्निंग आउटकम के साथ कार्य।
3. शाला प्रबन्धन समिति एवं समुदाय के साथ बैठक लेकर सत्र भर के लिए योजना।
4. अपनी शाला के लिए सभी के साथ मिलकर गुणवत्ता में सुधार हेतु मिशन स्टेटमेंट।
5. अपने साथियों के साथ मिलकर विभिन्न आनलाइन कोर्स में पंजीयन कर उसे पूरा करना।
6. बच्चों की पूरे सत्र में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने आवश्यक कार्यवाहियां।
7. राज्य स्तरीय आकलन के परिणामों के आधार पर प्रत्येक बच्चे से साथ सुधारात्मक प्रयास।
8. बच्चों को दिए जाने वाले अभ्यास पुस्तिकाओं पर नियमित कार्य करने आवश्यक व्यवस्थाएं।
9. बच्चों के मौखिक भाषा विकास पर नियमित कार्य हेतु उपलब्ध सुझावों पर अमल।
10. सभी शिक्षक इनोवेटिव पाठशाला नामक एप्प डाउनलोड कर उसमें से अपने पाठ को पढ़ाने हेतु नवाचारी तरीकों पर कक्षा में अभ्यास कार्य।
11. माह जुलाई में बच्चों के आकलन के लिए आवश्यक तैयारी हेतु प्रत्येक बच्चे के साथ निर्धारित लर्निंग आउटकम पर आधारित कार्य।
12. सभी शिक्षकों को विषयवार एक दूसरे से सीखने हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन कर इस सत्र में उसे सक्रिय रखना।
13. अपने जिले के प्राथमिक से लेकर हायर सेकंडरी स्तर तक के शिक्षकों का टेलीग्राम में एक ग्रुप बनाने हेतु सभी को टेलीग्राम डाउनलोड कर ग्रुप में जुड़ने हेतु निर्देश।
14. सभी उच्च प्राथमिक कक्षाओं में बाल केबिनेट/ यूथ क्लब को सक्रिय करना एवं चुनाव।
15. शालाओं में सुरक्षा ओडिट का आयोजन कर खतरों को भांप कर सुधार हेतु प्रयास।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए सभी शिक्षकों से आग्रह है कि प्रतिमाह निर्धारित बिन्दुओं पर अपने अपने शाला में काम करते हुए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने हेतु सभी आवश्यक प्रयास करेंगे ताकि कोई भी निर्धारित कार्य न छूट पाए।